अध्याय - तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि

3.1 प्रस्तावनाः–

अनुसंधान या शोधकार्य में निश्चित और सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि शोध प्रबन्ध की व्यवस्थित रूप रेखा तैयार की जायें क्यों कि यह रूपरेखा ही शोधकार्य को निश्चित दिशा प्रदान करती है। इसमें प्रतिदर्श चयन की अपनी विशेष भूमिका होती हैं। इसके बाद उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। इसके पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है। तब कहीं जाकर एक शोधकार्य पूरा हो पाता है।

पी. वी. युग के अनुसार –

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है, जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पृष्टि की जाती है। तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।"

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की जानकारी प्राप्त करना है। अतः इस कार्य को शोधकर्ता ने सर्वेक्षण प्रणाली का चयन शिक्षकों की परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए किया गया है।

3.2 प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्श का चयन :-

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में कार्यरत 150 संविदा शिक्षकों को लिया गया है जिसमें 102 पुरूष संविदा शिक्षक तथा 48 महिला संविदा शिक्षक हैं।

प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। जिसका विवरण निम्नतालिका में दिया गया है।

3.3 प्रतिदर्श का विवरणः-

सारणी क्रमांक 3.3

3.31 प्रतिदर्श के लिए शासकीय विद्यालयों तथा शिक्षकों के विवरण की सारणी

क्र.	तहसील का नाम	लिंग	क्षेत्र		कुलयोग
			ग्रामीण	शहरी	
1.	निवाड़ी	पुरूष	17	8	25
		महिला	8	5	13
2.	पृथ्वीपुर	पुरूष	16	9	25
		महिला	8	4	12
3.	ओरछा	पुरूष	15	12	27
		महिला	7	5	12
4.	जतारा	पुरूष	17	8	25
		महिला	6	5	11
	योग				150

3.3.2 निवाड़ी तहसील के शासकीय विद्यालयों तथा शिक्षकों की सारणी

सारणी क्रमांक – 3.3.2

क्र.	विद्यालयों का नाम	विद्यालयों का प्रकार	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	शासकीय माध्यमिक शाला सेंदरी	ग्रामीण	4
2.	शासकीय कन्या विद्यालय निवाड़ी	शहरी	8
3.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय तरीचर	ग्रामीण	5
4.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय बिनवारा	ग्रामीण	6
5.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रं. 1	शहरी	7
6.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रं. 2	शहरी	5
7.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय थोंना	ग्रामीण	3
	योग		38

3.3.3 पृथ्वीपुर तहसील के शासकीय विद्यालयों तथा शिक्षकों की सारणी

सारणी क्रमांक 3.3.3

क्रं.	विद्यालयों के नाम	विद्यालय का प्रकार	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	शासकीय माध्यमिक कन्या विद्यालय पृथ्वीपुर	शहरी	5
2.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय दिगौड़ा	शहरी	8
3.	शासकीय प्राथमिक विद्यालय विंदपुरा	ग्रामीण	4
4.	शासकीय माध्यमिक शाला अछुरुमाता	ग्रामीण	6
5.	शासकीय प्राथमिक शाला घमना	ग्रामीण	6
6.	शासकीय विद्यालय मंडिया	ग्रामीण	5
7.	शासकीय विद्यालय पृथ्वीपुर	शहरी	3
	योग		37

3.3.4 ओरछा तहसील के शासकीय विद्यालयों एवं शिक्षकों की सारणी

सारणी क्रमांक 3.3.4

क्रं.	विद्यालयों के नाम	विद्यालय का प्रकार	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	शासकीय विद्यालय रामनगर	ग्रामीण	6
2.	कन्या प्राथमिक शाला राधापुर	ग्रामीण	5
3.	माध्यमिक शाला आजादपुरा	ग्रामीण	4
4.	शासकीय प्राथमिक शाला मडोंर	ग्रामीण	4
5.	शासकीय प्राथमिक शाला महाराजपुर	ग्रामीण	6
6.	शासकीय विद्यालय ओरछा	शहरी	10
7.	शासकीय विद्यालय भोजपुरा	ग्रामीण	3
	योग		39

3.3.5 जतारा तहसील के शासकीय विद्यालयों एवं शिक्षकों की सारणी

सारणी क्रमांक 3.3.5

क्रं.	विद्यालयों के नाम	विद्यालय का प्रकार	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	शासकीय विद्यालय चंदेरा	ग्रामीण	6
2.	शासकीय माध्यमिक शाला जतारा	शहरी	5
3.	शासकीय माध्यमिक शाला बराना	शहरी	5
4.	शासकीय विद्यालय मोहनगड	ग्रामीण	4
5.	शासकीय विद्यालय जुरूआ	ग्रामीण	8
6.	कन्या प्राथमिक शाला बम्हौरी	ग्रामीण	6
7.	शासकीय प्राथमिक शाला वहाघाट	ग्रामीण	2
	योग		36

3.4 उपकरण –

एक सफल अनुंसाधन के लिए उपयुक्त यंत्रों एवं उपकरणों का चयन महत्वपूर्ण है। नये उपकरण का निर्माण अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर करना चाहिए ताकि वह उन्ही का मापन कर सकें जिसके लिए वह निर्मित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में संविदा शिक्षकों के लिए एक प्रपत्र तैयार किया गया है।

उपकरण का वर्णन :–

अध्यन हेतु तैयार किये गये प्रपत्र में मुख्यतः दो भाग हैं।

सामान्य खण्ड

विशिष्ट खण्ड

सामान्य खण्ड को दो भागों में विभाजित किया गया।

(अ) व्यक्गित जानकारी :–

इसके अन्तर्गत नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, शैक्षणिक तथा व्यावसायिक योग्यता पदनाम, विद्यालय का नाम नियुक्ति दिनांक की जानकारी के लिए प्रारूप है।

(ब) पारिवारिक जानकारी –

इसके अंतर्गत संविदा शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति, सदस्यों की संख्या, परिवार का प्रकार, कमाने वाले अन्य सदस्यों की संख्या, परिवार का व्यवसाय तथा परिवार के वार्षिक आय की जानकारी के लिए प्रारूप है।

उपरोक्त दोनों (व्यक्तिगत तथा परिवारिक) जानकारियों से संविदा शिक्षक के लिए तथा उसके परिवार के आर्थिक सामाजिक स्तर के आंकलन में सहायता मिलती है।

विशिष्ट खण्ड :-

इस खण्ड में सात उपखण्ड हैं जो शोध के चर के बारे में आंकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सातों उपखण्ड निम्नानुसार हैं।

(1) वर्तमान पद

(2) पद से संबंधित कार्य

(3) निर्धारित वेतन

(4) विद्यालय प्रशासन

(5) नियमित शिक्षकों का व्यवहार

(6) शिक्षा विभाग के नियम

(7) सामाजिक प्रतिष्ठा

प्रत्येक उपखण्ड में प्रश्न हैं जिनके उत्तर हाँ या नहीं में टिक लगाकर देना है। प्रथम एवं सप्तम उपखण्ड में पांच प्रश्न है जबकि अन्य सभी में तीन प्रश्न है। इस प्रकार इस खण्ड में कुल 25 प्रश्न हैं।

इसमें संविदा शिक्षक को सहमति या असहमति व्यक्त करनी हैं। प्रश्नों को बनाते समय इस बात को विशेष ध्यान रखा गया है कि संविदा शिक्षकों द्वारा किये गए टिक निशान से संबंधित उपखण्ड से इसकी संतुष्टता या असंतुष्टता का पता लगाया जा सकें।

अन्त में संविदा शिक्षकों के अतिरिक्त विचारों को व्यक्त करने की व्यवस्था प्रपत्र में की गई ।

3.5 प्रपत्रों के संकलन की प्रक्रिया :-

शोध उपकरणों के प्रशासन के लिए 10 दिन का समय निश्चित किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा 1 फरवरी 2011 से 11 फरवरी 2011 के दौरान मैदानी कार्य (फिल्डवर्क) किया गया। अनुसंधानकर्ता ने प्रपत्रों की पूर्ति के लिए शोधकर्ता ने सर्वप्रथम विद्यालयों के प्रचार्य के पास जाकर अपने कार्य एवं उद्देश्य से उनको परिचित कराया तथा प्रधानाचार्य

की अनुमति लेकर कार्य को आगे बढ़ाया गया था। शोधकर्ता के अनुरोध पर आचार्य प्रसन्नतापूर्वक उन अध्यापकों को प्रपत्रों की पूर्ति हेतु निर्दिष्ट करते थे जिनकी शोधकर्ता को आवश्यकता थी। प्रपत्रों के विवरण से पहले अनुसंधानकर्ता ने उन सभी अध्यापकों को व्यक्तिगतरूप से मिलकर अपने अनुसंधानकार्य के महत्व और उद्देश्य से अवगत कराया एवं अपने इस कार्यपूर्ति के लिए सहयोग देने का अनुरोध किया।

परन्तु शोधकर्ता को प्रपत्रों को संकलन में कई कठिनाईयां उत्पन्न हुई।

1. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाने के लिए साधन उपलब्ध था किन्तु समय अधिक लगता था।
2. प्रदत्त संकलन के लिये दो वार जाना पड़ा था इसलिये आय एवं समय अधिक लगा।
3. शिक्षकों में सभ्रम का वातावरण लग रहा था कि हमारी कसौटी ली जा रही है। इसलिये कुछ शिक्षकों ने प्रश्नावली वापस नहीं दी।

प्रपत्र वितरण के समय दिये गये निर्देश –

1. इस प्रपत्र का मुख्य उद्देश संविदा शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना है।
2. यह किसी प्रकार की परीक्षा नहीं है इससे प्राप्त जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जायेगी।
3. सभी प्रश्नों में विकल्प दिये गये हैं जिनमें से एक विकल्प का चुनाव कीजिए।
4. प्रश्न के उत्तर देने के लिये कोई समय सीमा नहीं है।
5. सभी प्रश्नों को अच्छी तरह पढ़कर और समझकर उत्तर दें।
6. निर्धारित स्थान पर ही विकल्पों का चुनाव कीजिये।

3.6 मूल्यांकन –

प्रपत्र के सामान्य खण्ड में दी गई जानकारियों की मदद से संविदा शिक्षकों के व्यक्तिगत तथा पारिवारिक स्थिति का आंकलन किया गया।

प्रपत्र के विशिष्ट खण्ड के प्रथम एवं सप्तम् उपखण्ड के पांच प्रश्नों में से यदि संविदा शिक्षक कम से कम तीन प्रश्न 'हाँ' टिक करता है तो उसे उस उपखण्ड से संतुष्ट माना जायेगा। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम एवं सष्ट्म उपखण्ड के तीन प्रश्नों में से यदि संविदा शिक्षक कम से कम दो प्रश्न 'हाँ' टिक करता है तो उसे उस उपखण्ड में संतुष्ट माना जायेगा। और यदि प्रथम एवं सप्तम् में तीन या तीन से अधिक 'नही' टिक करता है एवं अन्य में दो या दो से अधिक 'नही' टिक करता है तो संबंधित उपखण्ड से असंतुष्ट माना जायेगा।

संकलित कुल प्रदत्तों का लिंग, वर्ग, ग्रामीण तथा शहरी, शैक्षणिक योग्यता तथा व्यावसायिक योग्यता के आधार पर सारणीयन किया गया है।

3.7 सांख्यिकी का प्रयोग :–

संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिये शोधकर्ता द्वारा प्रतिशत तथा काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया है।